अभ्यास पत्रक

पाठ – रैदास के पद

नाम :- ..... कक्षा :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

1. पद्यांश पढ़िए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए – (1x3=3 अंक)

''ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै।
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै॥''

1. कवि यहाँ भगवान को किस रूप में स्वीकार कर रहा है?

उत्तर - .....

2. 'गरीब निवाजु' पद का क्या अर्थ है?

उत्तर - .....

3. 'माथै छत्रु धरै' कहकर कवि क्या बताना चाहता है?

उत्तर - .....

2. निम्नलिखित कथनों के आधार पर सही विकल्प चुनिए – (Assertion-Reason) (2x2=4 अंक)

4. **Assertion (कथन):** प्रभु जात-पाँत नहीं देखते, केवल भक्ति देखते हैं।
   Reason (कारण): रैदास का मानना है कि हरि ने नामदेव, कबीर जैसे संतों को अपनाया।
   (क) A: सही, R: सही, R सही कारण है
   (ख) A: सही, R: सही, R सही कारण नहीं है
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: सही
5. **Assertion (कथन):** प्रभु केवल मंदिर और मस्जिद में रहते हैं।
   Reason (कारण): भक्तों के अनुसार ईश्वर का वास केवल मूर्तियों में है।
   (क) A: सही, R: सही, R सही कारण है
   (ख) A: सही, R: सही, R सही कारण नहीं है
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: सही

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए – (1x5=5 अंक)

6. कवि ने 'मोती और धागा' का प्रयोग किस भाव को प्रकट करने के लिए किया है?

उत्तर - .....

7. 'चंदन और पानी' का प्रतीकात्मक प्रयोग क्या दर्शाता है?

उत्तर - .....

8. 'नीचहु ऊच करै' – इस पंक्ति में कवि क्या संदेश दे रहा है?

उत्तर - .....

9. रैदास ने ईश्वर को 'स्वामी' और स्वयं को 'दास' क्यों कहा है?

उत्तर - .....

egyanarchive

10. ‘हरि जीउ ते सभै सरै’ का आशय क्या है?

उत्तर - .....

.....

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 50–60 शब्दों में दीजिए – (2x2=4 अंक)

11. पहले पद में कवि ने ईश्वर के साथ आत्मिक एकता को किन उपमाओं द्वारा व्यक्त किया है?

उत्तर - .....

.....

.....

.....

12. ‘रैदास के पद’ में सामाजिक दृष्टि से कौन-सा क्रांतिकारी भाव निहित है?

उत्तर - .....

.....

.....

.....

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (4 अंक)

13. ‘रैदास के पदों’ में भक्ति और समर्पण की भावना किस प्रकार प्रकट होती है? उत्तर लगभग 100–120 शब्दों में दीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. निबंधात्मक प्रश्न – (5 अंक)

14. 'भक्ति का मार्ग सभी के लिए समान है' – इस विषय पर 160–180 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

egyanarchive

उत्तर कुंजी

1. कवि भगवान को अपना सब कुछ मानते हैं, उन्हें लाल (स्वामी) कहते हैं।
2. गरीब निवाजु का अर्थ है – दीन-दुखियों पर कृपा करने वाला।
3. इसका तात्पर्य है – भगवान के मस्तक पर राज्य का चिह्न (मुकुट) शोभा बढ़ा रहा है।
4. (क)
5. (घ)
6. जैसे मोती को धागे में पिरोया जाता है, वैसे ही भक्त प्रभु से जुड़ा होता है।
7. चंदन और पानी का प्रयोग प्रभु की सुगंध (भक्ति) के भक्त में समा जाने के भाव को दर्शाता है।
8. भगवान जात-पात नहीं देखते, वह नीच को भी ऊँच बना सकते हैं।
9. यह रैदास की समर्पित भक्ति का भाव है कि वे प्रभु को स्वामी और स्वयं को सेवक मानते हैं।
10. भगवान की कृपा से संसार में सब कुछ संभव है।
11. रैदास ने चंदन-पानी, दीपक-बाती, मोती-धागा जैसी उपमाओं द्वारा भक्त और प्रभु के बीच की आत्मिक एकता का वर्णन किया है। यह एकता इतनी गहरी है कि दोनों को अलग कर पाना असंभव है।
12. रैदास ने जातिवाद का विरोध किया और यह दिखाया कि ईश्वर सबको समान रूप से स्वीकार करता है। वह भक्ति और गुण को महत्त्व देता है, न कि जाति को।
13. रैदास के पदों में भक्ति और समर्पण की भावना अत्यंत गहराई से व्यक्त हुई है। वे प्रभु को चंदन, मोती, दीपक मानते हैं और स्वयं को पानी, धागा और बाती के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह प्रतीकात्मक भाषा भक्त और प्रभु के बीच की आत्मिक एकता को दर्शाती है। रैदास के अनुसार, एक बार जब भक्ति का रंग चढ़ जाता है तो वह कभी उतरता नहीं। वे प्रभु को अपना स्वामी मानते हैं और स्वयं को उनका दास। यह सम्पूर्ण समर्पण और आंतरिक भक्ति का प्रतीक है। रैदास भक्ति को जाति और सामाजिक भेदभाव से ऊपर मानते हैं।
14. भक्ति ऐसा मार्ग है जो हर मनुष्य के लिए समान रूप से खुला है। चाहे व्यक्ति किसी भी जाति, धर्म या वर्ग से संबंधित हो, ईश्वर की भक्ति में कोई भेद नहीं होता। रैदास जैसे संतों ने अपने पदों के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि भगवान जात-पात नहीं देखते, वे केवल सच्ची भक्ति को स्वीकार करते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि प्रभु ने अनेकों ऐसे भक्तों को अपनाया जो समाज की दृष्टि में नीच माने जाते थे। उदाहरणस्वरूप, नामदेव, कबीर, सैनु जैसे संतों को भगवान ने उतना ही सम्मान दिया जितना किसी ब्राह्मण को दिया जा सकता था। इससे यह सिद्ध होता है कि भक्ति के मार्ग पर चलने के लिए किसी विशेष जन्म या कुल की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि सच्चे मन, विश्वास और समर्पण की ज़रूरत होती है। आज के समय में भी जब समाज कई भेदभावों से ग्रसित है, तब रैदास का यह विचार और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है कि भक्ति ही वह साधन है जो सबको जोड़ता है, ऊँच-नीच मिटाता है और मनुष्य को ईश्वर से जोड़ता है।